

loc., dat. (eines nom. act.) oder infin.: भूद मनः कृणुष्व वृत्रतूर्यै RV. 8, 19, 20. देवत्रा कृणुते मनः 5, 61, 7. नार्थे कुरुते मनः M. 12, 118. पापे MBh. 3, 11750. मा स्म शेके मनः कथाः N. 14, 22. R. 1, 24, 19. विषादे MBh. 3, 11008. द्वयोरेकतरे बुद्धिः क्रियतामथ पुष्कर । कैतवेनातवत्या वा युद्धे वा नाम्यता धनुः ॥ N. 26, 10. नानृते कुरुषे भावम् MBh. 3, 11633. को हि वृ-पमिदं त्यक्त्वा दिव्यं तव — मानुषीषु — भावं कुर्यात् R. 3, 24, 11. विनाशे शा-त्त्वरजस्य तदेवाकर्त्तव्यं मतिम् MBh. 3, 782. Viçv. 13, 15. MBh. in Benf. Chr. 10, 2. मुनिश्चितो मतिं कृत्वा यष्टव्ये R. 1, 8, 3. गमनाय मतिं चक्रे 9, 55. कुरुष्व बुद्धिं दिशतां वधाय कृतागसो भारत निग्रहे च MBh. 3, 12328. R. 1, 14, 34. ततो ऽलाबुं समुत्सृष्टुं मनश्चक्रे MBh. 3, 8844. R. 2, 28, 1. वनवासकृता मतिः 5, 24, 49. Die Ergänzung in directer Rede mit इति: तन्मनो ऽकुरुता-त्मन्वी स्यामिति Çat. Br. 10, 6, 5, 1. द्रष्टा तवास्मीति मतिं चकार MBh. 3, 12335. श्रकृता मतिः eine schwankende Gesinnung: श्रकृता ते मतिस्तात पुनर्वात्येन मुख्यमे MBh. 14, 34. Vgl. श्रकृता प्रज्ञा 1, 5137 und कृतबुद्धिः नैष्ठिको बुद्धिं करु einen festen Entschluss fassen Viçv. 13, 15. — 15) eine Sache oder eine Person zu Etwas machen, mit zwei acc.: कुविन्मो गो-पो कर्त्तसे जनस्य RV. 3, 43, 5. कस्ते मातरं विधवामचक्रत् 4, 18, 12. युञ्जं हि मारमकृथाः 5, 30, 8. इष्टका धेनुः कुरुते Çat. Br. 9, 1, 2, 13. 11, 7, 2. श्वेनम-स्य वत्तः कृणुतात् Ait. Br. 2, 6. आदित्यं काष्ठामकुर्वत् sie machten sich die Sonne zum Ziel 4, 7. कृणुहि वस्यसो नः RV. 4, 2, 20. यदा सत्यं कृणुते मनु्यमिन्द्रः 17, 10. KHAND. Up. 6, 16, 1. M. 8, 246. चकार सर्वान्स वयस्य-वान्धवान् R. 2, 103, 47. दातृन्प्रतिग्रहीतृषु कुरुते फलभागिनः M. 3, 143. मा कृष्टुं विषमं समम् 4, 225. प्रमाणानि च कुर्वति तेषां धर्मान्यथोदितान् 7, 203. MBh. 3, 14615. N. 12, 14. 16, 10. Viçv. 10, 1. 12, 18. 24. Daç. 1, 43. 2, 50. Çik. 17, 3. 24, 16. 69, 2. 75, 11. 90. PAÑKAT. 97, 6. Ragh. 2, 15. Vid. 11, 19, 40. तावदार्द्रपृष्ठाः क्रियतां वाजिनः Çik. 8, 14. असौ नृपेण चक्रे पु-वराजशब्दभाक् Ragh. 3, 35. (यया) दशरात्रं कृता रात्रिः R. 3, 2, 12. Çik. 136, 186. 23, 12. Auch in comp. mit dem praed.: जीविकाकृत्य, उपनि-षत्कृत्य P. 1, 4, 79. भेषजकृत्य zur Arznei gemacht KHAND. Up. 4, 17, 8. विषकृत्य R. 2, 98, 4. श्रवमानकृतः क्रोधः 4, 34, 31. Vgl. P. 2, 1, 59. In der Regel erleidet der Auslaut des praed. in der Zusammensetzung eine Veränderung, so geht z. B. श्र in ई, इ und उ in ई und ऊ, श्रू (ऋ) in री über: श्रुज्जीकरोति, मृहृकरोति, मात्रीकरोति P. 5, 4, 50. 51. 6, 4, 152. 7, 4, 26. 27. 32. Vop. 7, 81—84. — 16) mit Zahladverbien auf धा in so und so viele Theile zerlegen: द्विधा कृत्वा, द्विधाकृत्य oder द्विधाकारम् P. 3, 4, 62. Vgl. auch u. नाना und विना. ० गुणैककृत् mit einem vorangeh. Zahl- worte: so und so oft pflügen P. 5, 4, 59. Vop. 7, 89. In derselben Bed. द्वितीयैकरोति P. 5, 4, 58. Vop. a. a. O. शतकृत्वा (वसुंधराम्, महार्णवम्) R. 4, 46, 14. 5, 1, 63 scheint nach hundertmaliger Durchwanderung zu bedeuten. — 17) in Verbindung mit einer adverbialen Form auf वत् Etwas einem Andern gleichstellen. राजं तृणावत्कृत्वा Vet. 34, 16. — 18) करु in Verbindung mit einem adv. auf सात् Etwas ganz zu Etwas (० सा-त्) machen, Jmd unterwerfen, Jmd Etwas schenken P. 5, 4, 52. 54. 55. Vop. 7, 85. 86. In der letzten Bedeutung auch in Verbindung mit einer adverbialen Form auf त्रा ebend. — 19) Jmd zu Etwas (dat.) veranlas- sen, zu Etwas verhelfen: तम् श्रकृत्वलेधा भुवे कम् RV. 10, 88, 10. प्रबुधै नः पुनस्काधि VS. 4, 14. तमिह धातवे कः RV. 1, 164, 49. 2, 5, 7. ऊर्ध्वान्नः कर्तं जीवसे 1, 172, 3. Jmd einem Zustande u. s. w. preisgeben: न स्तो-

तारं निदे करः RV. 3, 41, 6. नेत्यश्वन्प्रमेदे करवामहे Çat. Br. 4, 4, 2, 11. — 20) Jmd (acc.) Etwas anhaben: किं नूनमस्मान्कृषावदरातिः RV. 8, 48, 3. कन्या करु ein Mädchen entehren: श्रभिषक्त्य तु यः कन्या कुर्याद्वर्षेण मा- नवः M. 8, 367. कन्यैव कन्या या कुर्यात् 369. Vgl. u. प्र. — 21) anstellen (in einem Amte): तस्मादेवंविदमेव ब्रह्माणं कुर्वति KHAND. Up. 4, 17, 10. पुरोहितं च कुर्वति वृणुयादेव चरित्रम् M. 7, 78. अथ्यत्तान्विविधान्कुर्यात्तत्र तत्र विपश्चितः 81. ग्रामस्याधिपतिं कुर्यादश्यामपतिं तथा 115. Vgl. u. प्र. — 22) Jmd auffordern, beauftragen: श्रपुत्रो ऽनेन विधिना भुतां कुर्वति पु-त्रिकाम् । यदपत्यं भवेदस्यां तन्मम स्यात्स्वधाकारम् ॥ M. 9, 127. 128. पु-त्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रो ऽनुजायते 134. 136. Mit einer Ergänzung im loc.: पुत्रं कृत्वा प्रजाकृते R. 2, 2, 8. — 23) von einer Krankheit (abl. oder tss) verhelfen: प्रवाहिकायाः oder प्रवाहिकातः कुरु P. 5, 4, 49. Sch. — 24) beginnen, mit dem infin.: चक्रे शोभयितुं पुरीम् R. 2, 6, 10. Goar. 5, 10: चक्रे शोभां परा पुनः. — 25) thun, zu Werke gehen, verfahren: कर्त्त एवाग्निना जुषेतां कृविः VS. 21, 43. करदेवं सरस्वती 21, 44. 46. Çat. Br. 1, 9, 4, 14. तथा न कुर्यात् 7, 2, 12. Ait. Br. 6, 26. दृक्कृानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकृवो ऋजिश्चना RV. 10, 138, 3. यथा ब्रूयुस्तथा कु-र्यात् M. 3, 253. 7, 177. नैवं कुर्या पुनः 11, 230. अयमेवं तथा कुर्मि यथा ल-घ्नी भविष्यसि MBh. 3, 10943. तथा चक्रुः R. 1, 9, 10. Çik. 9, 18. 93, 15. त-था करिष्ये यथा PAÑKAT. 69, 12. सो ऽन्यथा न करिष्यति R. 2, 37, 30. य-थोक्तं करोति Çik. 7, 3. कुर्याद्यथोचितम् Hit. I, 30. मूढो ऽयं कुरुते जनः ver-fährt wie ein Thor PAÑKAT. II, 127. pass. impers.: इदानीमेवं क्रियताम् Hit. 14, 3. एवं कृते PAÑKAT. 261, 6. — 26) thätig sein, handeln im aus-gezeichneten Sinne, von dem heiligen Werke; den Göttern dienen, wie βέξεν und facere: व्यं हि ते चक्रमा भूर्दे दावने RV. 8, 46, 25. व्यं ह्याते चक्रमा सबाध आभिः शर्मभिः 4, 17, 18. ता चक्राणा उतिभिर्नव्येतीभिर्-स्मत्रा रायौ नियुतः सचत्ताम् 41, 10. कतिभिर्यमद्यग्भिर्हीनास्मिन्यज्ञे क-रिष्यति Çat. Br. 14, 6, 4, 9. अग्नौ कुर्यात् M. 3, 210. Vgl. auch u. d. desid. Der vollständige Ausdruck ist कर्म करुः श्रकृन्कर्म कर्मकृत्, देवेभ्यः कर्म कृत्वा VS. 3, 47. — 27) die Bedeutung von इति कृत्वा ist schon u. 1. इ-ति 6. angegeben worden; hier folgen noch einige fernere Belege: MBh. 3, 13818. PAT. zu P. 8, 3, 108. MRĀKH. 53, 13. MĀLAV. 63, 16. MUDRĀR. 82, 19. 83, 1. Belege aus dem Prākṛit findet man noch bei BÖHTLINGK zu Çik. 73, 6. Die ursprüngliche Bedeutung von इति कृत्वा ist wohl so ge- than habend d. i. solche Worte ausgesprochen habend; vgl. R. 6, 82, 56: एवमस्त्विति कृत्वा स प्रययौ.

caus. कारयति, ०ते 1) zur Thätigkeit antreiben, machen lassen, dafür Sorge tragen, dass Etwas geschieht u. s. w.; mit dem acc. der Sache: न केनचित्कारयति करणम् das Werkzeug wird von Niemand zum Handeln angetrieben SIKHJAK. 31. अग्निं निशि कारयमाणः KAUC. 46. कारयेद्दृक्-मात्मनः M. 7, 76. R. 2, 67, 10. सेतुम् 5, 95, 33. द्यूतं समाह्वयं चैव यः कुर्या-त्कारयेत वा M. 9, 224. लेख्यं तु कारयेत् JĠĠ. 1, 317. स राजा पण्डितसभां कारितवान् Hit. 7, 12. तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथग्दण्डाणि कारयौ चकार KHAND. Up. 5, 11, 5. भोजनाच्छादनादिक्रियां कारयित्वा PAÑKAT. 129, 9. कारयेत्क-वविक्रयौ M. 8, 401. MBh. 1, 5722. R. 2, 76, 3. 77, 1. विवाहे कारयामास दमयत्या नत्स्य च N. 5, 40. MBh. 3, 16705. स्वयंवरं कारयिष्ये सीतायाः R. 3, 4, 24. रामलक्ष्मणयो राजशोदानं कारयस्व ह lass dir von ihnen geben 1, 71, 23. समुद्योगमुदीर्णानां रत्नसो सौम्य कारय 3, 28, 21. नामयेयम्